

विषय - संयुक्त परिवार: आवश्यकता एवं महत्व

डॉ. स्नेह लता शिवहरे
असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र
खुन खुन जी गर्ल्स डिग्री कॉलेज,
चौक, लखनऊ

संयुक्त परिवार की अवधारणा, जहाँ कई पीढ़ियाँ एक साथ एक ही छत के नीचे रहती हैं, सदियों से पारंपरिक भारतीय समाज की आधारशिला रही है। संयुक्त परिवारों में, दादा-दादी, माता-पिता और पोते-पोतियाँ अक्सर ज़िम्मेदारियाँ, संसाधन और समुदाय की भावना साझा करते हैं, एक-दूसरे को भावनात्मक और वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। हालाँकि, आधुनिकीकरण और शहरीकरण की शुरुआत के साथ, पारिवारिक संरचनाओं की गतिशीलता में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। आधुनिक समाज, जो बढ़ती गतिशीलता, एकल परिवारों और व्यक्तिवाद की विशेषता है, ने संयुक्त परिवारों के प्रचलन में कमी ला दी है। जैसे-जैसे लोग शहरों में बेहतर शिक्षा और करियर के अवसरों की तलाश करते हैं, वे अक्सर अपने पुश्तैनी घरों को छोड़कर अपने एकल परिवार शुरू करते हैं, जिससे पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन होता है। इस बदलाव के परिणामस्वरूप अंतर-पीढ़ीगत संबंध, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक सहायता प्रणाली का नुकसान हुआ है। इसके अलावा, आधुनिक समाज द्वारा व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वतंत्रता पर जोर देने से अलगाव और अलगाव की भावना पैदा हुई है, जिससे अक्सर परिवार के बुजुर्ग सदस्य असुरक्षित और उपेक्षित रह जाते हैं।

कुंजी शब्द – संयुक्त परिवार, गतिशीलता, तकनीकी विकास, आधुनिकता, अर्थव्यवस्था, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक विरासत।

संयुक्त परिवार का परिचय एवं परिभाषा-

संयुक्त परिवार, जिसे हम पारंपरिक भारतीय समाज की मीनार मानते हैं, आज के आधुनिक युग में भी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुका है। वर्तमान समय में जब व्यक्तिगतता और स्वतंत्रता की भावना बढ़ रही है, तब भी पारिवारिक बंधनों का महत्व कम नहीं हुआ है। इसके पीछे कई कारण हैं, जैसे कि

सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक पहलू। इस युग में संचार के साधन और तकनीकी विकास ने हमें भले ही एकल परिवारों में रहने को प्रेरित किया हो, परंतु संयुक्त परिवार का ढांचा आज भी अनेक लाभ प्रदान करता है। संयुक्त परिवार में एक साथ रहने का अर्थ केवल शारीरिक निकटता नहीं, बल्कि भावनात्मक जुड़ाव, सहयोग और संचार भी है। जहां एकल परिवारों में अक्सर लोगों को मानसिक तनाव, अवसाद और अकेलापन का सामना करना पड़ता है, वहीं संयुक्त परिवार में यह समस्याएं कम दिखती हैं। परिवार के सदस्यों का आपस में सहयोग और एक-दूसरे का समर्थन मिलने से व्यक्ति मानसिक और भावनात्मक रूप से मजबूत होता है।

संयुक्त परिवार की तीन प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:

इरावती कर्वे के अनुसार— "संयुक्त परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो सामान्यतः एक ही घर में रहते हैं, एक ही रसोई का भोजन करते हैं, समान संपत्ति के स्वामी होते हैं, सामूहिक रूप से धार्मिक कार्यों में भाग लेते हैं तथा रक्त-संबंधों से जुड़े होते हैं।"

आई. पी. देसाई के अनुसार— "संयुक्त परिवार वह परिवार है जिसमें मूल (न्यूक्लियर) परिवार से अधिक पीढ़ियों के सदस्य शामिल हों तथा वे संपत्ति, आय और पारस्परिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के आधार पर एक-दूसरे से जुड़े हों।"

के. एम. कपाड़िया के अनुसार - "संयुक्त परिवार वह परिवार है जिसमें अनेक पीढ़ियों के सदस्य एक साथ रहते हैं, एक ही रसोई से भोजन करते हैं, समान संपत्ति का उपयोग करते हैं तथा धार्मिक और सामाजिक कर्तव्यों का सामूहिक रूप से निर्वहन करते हैं।"

आधुनिक समाज में संयुक्त परिवार की आवश्यकता –

संयुक्त परिवार का स्वरूप भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। हालांकि, आधुनिक युग में परिवारों की संरचना में बदलाव आया है, लेकिन संयुक्त परिवार फिर भी अपनी जगह बना सकते हैं। आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में, जहां लोग अपनी करियर और व्यक्तिगत जीवन पर अधिक ध्यान देने

लगे हैं, ऐसे में संयुक्त परिवार का मूल्य बढ़ जाता है। संयुक्त परिवार में रहने से न केवल भावनात्मक समर्थन मिलता है, बल्कि आर्थिक स्थिरता भी बनी रहती है। एक साथ मिलकर काम करने से खर्च कम हो जाते हैं, और कई दिमाग मिलकर समस्याओं का हल निकालने में सहायक होते हैं। संयुक्त परिवार में सभी सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। बुजुर्गों का अनुभव और ज्ञान नई पीढ़ी को दिशा देने में मदद करता है, जबकि युवा सदस्यों की ऊर्जा और नवाचार परिवार को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं।

गृहस्थी के विशेष कार्यों में, जैसे कि बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और परिवार के मूल्यों का संरक्षण, संयुक्त परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। एक-दूसरे के साथ रहने से बच्चे में आपसी सौहार्द और सहयोग की भावना का विकास होता है। माता-पिता के कार्य से अधिक समय बिताने के बावजूद, बच्चे अपने दादा-दादी या अन्य रिश्तेदारों के साथ समय बिताते हैं, जो उन्हें जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों से अवगत कराता है।

हालांकि, आधुनिकता के साथ नई चुनौतियाँ भी आई हैं। व्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत स्वच्छंदता का बढ़ता ध्यान संयुक्त परिवार के पारंपरिक ढांचे को प्रभावित करता है। युवा पीढ़ी स्वतंत्र रहना पसंद करती है, जिससे संयुक्त परिवारों का मॉडल धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। लेकिन यह जरूरी नहीं है कि स्वतंत्रता और सामूहिकता एक-दूसरे के विरोधी हों। यदि परिवार में आपसी सम्मान और समझ बढ़े, तो संयुक्त परिवार का अस्तित्व सही दिशा में विकसित हो सकता है।

संयुक्त परिवारों में त्योहारों, समारोहों और पारिवारिक गतिविधियों की रौनक और आत्मीयता होती है, जो एकल परिवारों में नहीं मिल पाती। इन सामाजिक गतिविधियों से न केवल परिवार के सदस्यों के बीच का बंधन मजबूत होता है, बल्कि समाज में भी एकता और सामंजस्य बढ़ता है।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवार की आवश्यकता आज के समाज में उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी पहले थी। यह केवल एक निवास स्थान नहीं बल्कि एक ऐसा संगठन है जहां प्यार, सम्मान, सहयोग और समझदारी का महत्त्व है। इसके माध्यम से हम न केवल व्यक्तिगत विकास कर सकते हैं, बल्कि समाज के निर्माण में भी योगदान दे सकते हैं। वर्तमान में, जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता की मांग बढ़ रही है, वहीं हमारी सांस्कृतिक जड़ों को भी संभालना जरूरी है। संयुक्त परिवार इस जड़ों को बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम है। कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारियों ने हमें यह सिखाया है कि जब चुनौतियों का सामना करना हो, तो परिवार का समर्थन सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसलिए, हमें

संयुक्त परिवारों के महत्व को समझते हुए, उन्हें संजोने की आवश्यकता है। संयुक्त परिवार केवल एक सामाजिक ढांचा नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा रिश्ता है जो हमें जीवन के हर चरण में सहारा देता है। आज के प्रतिस्पर्धी और बदलते हुए समय में, संयुक्त परिवार का महत्व बढ़ता जा रहा है और हमें इसे संरक्षित करने का प्रयास जारी रखना चाहिए। यह न केवल भविष्य पीढ़ी के लिए आवश्यक है, बल्कि हमारे स्वयं के कल्याण के लिए भी अनिवार्य है।

आधुनिक समाज में संयुक्त परिवारों का महत्व-

आज के समाज में संयुक्त परिवार का महत्व पहले की अपेक्षा और भी अधिक बढ़ गया है। आधुनिक जीवन की व्यस्तता, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और तनावपूर्ण वातावरण में संयुक्त परिवार व्यक्ति को भावनात्मक, सामाजिक तथा आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। इस परिवार व्यवस्था में सभी सदस्य एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी बनते हैं, जिससे प्रेम, सहयोग, त्याग और आपसी विश्वास की भावना विकसित होती है। बच्चों को दादा-दादी और अन्य बड़े-बुजुर्गों से संस्कार, नैतिक शिक्षा तथा जीवन के व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होते हैं, जबकि बुजुर्गों को सम्मान, अपनापन और देखभाल मिलती है। संयुक्त परिवार में घरेलू कार्यों और आर्थिक जिम्मेदारियों का बँटवारा होने से किसी एक व्यक्ति पर अत्यधिक बोझ नहीं पड़ता। यह व्यवस्था परिवार के सदस्यों को कठिन परिस्थितियों में मानसिक और आर्थिक सहारा भी देती है। इसके अतिरिक्त, पारिवारिक परंपराओं, संस्कृति और सामाजिक मूल्यों का संरक्षण संयुक्त परिवार के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से होता है। यद्यपि आधुनिक समय में एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है, फिर भी संयुक्त परिवार की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है। यदि परिवार के सदस्य आपसी समझ, सम्मान और सहयोग की भावना बनाए रखें, तो संयुक्त परिवार आज भी सामाजिक एकता, पारिवारिक सुख-शांति और समग्र विकास का सबसे सशक्त आधार सिद्ध हो सकता है।

अर्थव्यवस्था की दृष्टि से भी संयुक्त परिवार का महत्व अनदेखा नहीं किया जा सकता। संयुक्त परिवार में आमदनी साझा होती है, जिससे आर्थिक सुरक्षा की भावना बढ़ती है। यदि एक सदस्य को नौकरी में कठिनाई होती है या व्यवसाय में घाटा होता है, तो अन्य सदस्य उसकी सहायता करते हैं। यहां पर वित्तीय दबाव कम होता है, और यह सदस्यों को एक दूसरे के साथ मिलकर समस्याओं का समाधान निकालने के लिए प्रोत्साहित करता है।

संयुक्त परिवारों में **बुजुर्गों का स्थान** विशेष होता है। वे अपनी जीवन के अनुभवों से छोटे सदस्यों को मार्गदर्शन देते हैं। बच्चों को दादा-दादी और नाना-नानी से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। उनकी कहानियाँ और अनुभव न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा का भी साधन बनते हैं। आज के बच्चे जिनकी परवरिश एकल परिवार में हो रही है, वे इस प्रकार के अनुभव और ज्ञान से वंचित रह जाते हैं।

संयुक्त परिवारों का एक और महत्वपूर्ण लाभ है - **सांस्कृतिक और पारिवारिक परंपराओं का संरक्षण**। भारत की समृद्ध सांस्कृति और विविधता को बनाए रखने में संयुक्त परिवारों की अहम भूमिका होती है। त्योहारों, समारोहों और अन्य पारिवारिक समारोहों में एकत्रित होना परंपराओं को जीवित रखता है। यह न केवल आनंद और खुशी का अनुभव कराता है, बल्कि परिवार के सदस्य एक-दूसरे से जुड़ने का एक मजबूत आधार भी प्रदान करता है।

हालांकि, संयुक्त परिवारों का एक और पहलू यह है कि **कभी-कभी विवाद और आपसी मतभेद** भी हो सकते हैं। लेकिन यह विवाद या तो सामान्य होते हैं और इन्हें बातचीत, समझदारी और प्रेम से सुलझाया जा सकता है। यदि परिवार के सदस्य एक-दूसरे के प्रति समझदारी और सहयोग की भावना रखते हैं, तो वे मिलकर किसी भी समस्या का समाधान निकाल सकते हैं।

संक्षेप में, संयुक्त परिवार आधुनिक समाज में अपनी जगह बना सकते हैं, बशर्ते कि परिवारों में संवाद, सम्मान और सहिष्णुता हो। परिवारों को पारंपरिक मूल्यों को संरक्षण देने के साथ-साथ नए विचारों और आवश्यकताओं का भी ध्यान रखना चाहिए। यह संयुक्त परिवार की संरचना को और अधिक सशक्त बना सकता है और उनके अस्तित्व को बनाए रख सकता है। यदि परिवार में सभी सदस्य एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और सहयोग का भाव रखते हैं, तो परंपरागत संयुक्त परिवार का मॉडल न केवल जारी रह सकता है, बल्कि उसे और अधिक फलने-फूलने का अवसर भी मिलेगा।

1. "भारतीय समाज", श्यामाचरण दुबे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018।
2. "समाजशास्त्र", राम आहूजा, रावत पब्लिकेशन्स, राजस्थान , 2020।
3. "भारतीय समाज", राम आहूजा, रावत पब्लिकेशन्स, राजस्थान , 2021।
4. "समाजशास्त्र के सिद्धांत", जी. के. अग्रवाल, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा , 2019।
5. "भारतीय समाज एवं संस्कृति", योगेन्द्र सिंह, रावत पब्लिकेशन्स, राजस्थान , 2017।
6. "Indian Society", M. N. Srinivas, Orient blackswans, Hyderabad , 2012.
7. "The Family in India", K. M. Kapadia, Oxford University press, Noida , 1966.
8. "Marriage and Family in India", K. M. Kapadia, Oxford University Press, Noida , 1968.
9. "Social Change in Modern India, M. N. Srinivas, Orient Blackswans, Hyderabad , 1995.
- 10, " Society in India", André Béteille, Oxford University Press, Noida, 2002.

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.